डी॰ बी॰ कॉलेज, जयनगर, मधुबनी

नाम - मो॰ मुन्ना

सहायक प्राचार्य (अतिथि शिक्षक)

मैथिली विभाग, बी॰ ए॰ 1st

अनिवार्य भाषा (मातृभाषा) मैथिली (50 Marks)

:- विद्यापति द्वारा लिखल गीत गोसाउनिक गीतक व्याख्या करू?

अथवा- मिथिलाक गोसाउनिक गीतक व्याख्या करू ?

अथवा- जय-जय भैरवि असुर भयाओनि पशुपति भामिनि माया सहज सुमति ....

विद्यापति कवि तुअ पद सेवक पुत्र विसरु जनु माता

कविताक व्याख्या करू ?

:- प्रस्तुत कविता महाकवि विद्यापति द्वारा रचित वीर रस कें उत्पादन करयवला युद्धगीत सन "गोसाउनिक गीत" सँ लेल गेल अछि। प्रस्तुत गीत मैथिली जातिक राष्ट्रीय गीतक रूपमे प्रयुक्त एवं प्रसिद्ध अछि। मिथिलाक क्षेत्र प्रत्येक मांगलिक अवसर पर प्रयुक्त होमयवला ई गीत भक्तिरस सँ ओतप्रोत अछि आ एहिमे भयानक रसक सेहो पुष्टि भेल अछि।

महाकवि भगवतीक आराधना करैत छथि जे अहाँ भयानक स्वरूप रहितहुँ केवल राक्षसक हेतु भयानक छी आ मायास्वरूप रहितहुँ शिवक प्रेयसि छी। अहाँक जय हो, जय हो। सहज आ सुबुद्धिक (सुमति) एतेक वरदान दिअऽ जाहि सँ बुद्धि अहाँक चरण कमल भक्ति मे रत भऽ जाय।

अहाँक चरणक सेवा एकमात्र उद्धारक उपाय अछि। अहाँक चरण दिन-राति शवक आसन पर विराजमान रहैत अछि ओ अहाँक पयर मे चन्द्रमाक चूड़ामणि शोभित अछि, अर्थात अहाँक चरण मे चन्द्रकान्त मणिक कड़ा अछि।

डी० बी० कॉलेज, जयनगर, मधुबनी

नाम - मो० मुन्ना

सहायक प्राचार्य (अतिथि शिक्षक)

मैथिली विभाग, बी० ए० 1st

अनिवार्य भाषा (मातृभाषा) मैथिली (50 Marks)

विद्यापति द्वारा लिखल गेल गोसाउनिक गीतक व्याख्या करू?

अथवा- मिथिलाक गोसाउनिक गीतक व्याख्या करू ?

अथवा- जय-जय भैरवि असुर भयाओनि पशुपति भाविनि माया
सहज सुमति ....
विद्यापति कवि तुअ पद सेवक पुत्र बिसरु जनु माता
कविताक व्याख्या करू ?

प्रस्तुत कविता महाकवि विद्यापति द्वारा रचित वीर रस कें उजागर करयवला युद्धगीत सन "गोसाउनिक गीत" सँ लेल गेल अछि। प्रस्तुत गीत मैथिली जातिक राष्ट्रीय गीतक रूपमे प्रयुक्त एवं प्रसिद्ध अछि। मिथिलाक क्षेत्र प्रत्येक मांगलिक अवसर पर प्रयुक्त होमयवला ई गीत भक्तिरस सँ ओतप्रोत अछि आ एहिमे भयानक रसक सेहो पुष्टि भेल अछि।

महाकवि भगवतीक अराधना करैत छथि जे अहाँ भयानक स्वरूप रहितहुँ केवल राक्षसक हेतु भयानक छी आ मायास्वरूप रहितहुँ शिवक प्रेयसी छी। अहाँक जय हो, जय हो। सहज आ सुबुद्धि क (सुमति) एतेक वरदान दिअऽ जाहि सँ बुद्धि अहाँक चरण कमल भक्ति मे रत भऽ जाय।

अहाँक चरणक सेवा एकमात्र उद्धारक उपाय अछि। अहाँक चरण दिन-राति शवक आसन पर विराजमान रहैत अछि आ अहाँक पयर मे चन्द्रमाक चूड़ामणि शोभित अछि, अर्थात अहाँक चरण मे चन्द्रकान्त मणिक काढ़ा अछि।

अहाँ कतेक दैत्य कें मारि कए मुहँ मे लइ लेने छी आ कतेक कें उगालि कए कुरड़ कए देने छी।
अहाँक रंग कारी आँखि लाल आछि सँ लगैछ जेना कारी मेघ पर फूटल ललका कमल फुलायल आछि। अहाँ राक्षस कें चिबबैत छी जाहि सँ विकट कट कट ध्वनि भऽ रहल आछि। दूइ ठोर पाँडरि फूल सन लाल लगैत आछि जाहि मे रुधिरक फेन सँ फोका उठैत आछि। अहाँक घुँघरूक घनघनाहट जोर सँ आवाज कए रहल आछि आ अहाँक खड्ग (कांता) हनहन कए रहल आछि जे शत्रु संहारक सूचक आछि।

हे माता! महाकवि विद्यापति चरणक सेवक छथि। अतः पुत्र कें नहि बिसरि जायब।

एहितरहे एहि गीत मे शब्दालंकार एवं अर्थालंकार तथा ध्वन्यात्मक शब्दक कुशल प्रयोग एहिगीत मे कयल गेल आछि। भगवती जगदम्बाक प्रति अनुराग पुत्रक विनीत भक्ति भाव एहि गीतक वैशिष्ट्य थिक। कवि मातृरूपा जगदम्बा सँ सुबुद्धिक कामना करैत छथि। 'सुमति' केर तात्पर्य होयत आछि सुन्दर मति वा सुबुद्धि।

सम्पूर्ण पदावली मे रौद्र, वीभत्स आ भयानक सँ पुष्ट भक्ति रसक उन्मेष महाकवि विद्यापति कयने छथि जाहि मे प्रत्येक शब्दक प्रयोग भावक अनुकूल भेल आछि। 'बासर रैनि ... चन्द्रमणि-चूड़ा' मे रूपक अलंकारक प्रयोग भेल आछि। 'सघन वरन ... फुल कोका' मे अतिशयोक्ति, प्रतीयमान आ उत्प्रेक्षाक संगठन कवि कयने छथि।